IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

# पंडित दीन दयाल उपाध्याय के जीवन और कार्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

**अनिल कुमार दुबे[1] and डॉ. ज्योति रानी झा [2]**

शोधार्थी, विभाग हिंदी[1]

सह - प्राध्यापक, विभाग हिंदी[2]

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

**सारांश**

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक प्रख्यात विचारक, संगठनकर्ता और राष्ट्रवादी नेता थे, जिनका योगदान भारतीय समाज और राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उनका जीवन सरलता, निस्वार्थ सेवा और राष्ट्रवाद के सिद्धांतों पर आधारित था। उन्होंने एकात्म मानववाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जो भारतीय संस्कृति और परंपराओं पर आधारित एक समग्र सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) से जुड़े और भारतीय जनसंघ के प्रमुख विचारकों में से एक बने। उनकी विचारधारा समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान पर केंद्रित थी, जिसे वे "अंत्योदय" कहते थे। उन्होंने स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपनी नीतियों का आधार बनाया। उनके नेतृत्व और विचारों का भारतीय राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा और आज भी उनकी नीतियां और दर्शन विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं। उनका अकाल निधन एक अपूरणीय क्षति थी, किंतु उनके विचार आज भी भारत की नीति और समाज व्यवस्था को प्रभावित कर रहे हैं।

**मुख्य शब्द :** आर्थिक दर्शन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, शिक्षण और पत्रकारिता।

## परिचय

दीन दयाल उपाध्याय की सोच भारत के भविष्य को देखने के बहुआयामी प्रयासों में अंतराल को भरती है, खासकर स्वतंत्रता के बाद। यह एक वास्तविक घरेलू दर्शन है जो स्वदेशी समस्याओं के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश हो सकता है और कुछ संशोधनों के साथ विदेशी भूमि पर भी समान रूप से लागू किया जा सकता है। उनका एकात्म मानववाद हमारे सामने दर्शन का एक सुव्यवस्थित निकाय प्रस्तुत करता है जो हमारी संस्कृति

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

की प्राचीन ज्ञान परंपराओं से प्रेरित है। कठोर संवादों, चर्चाओं, बहस और प्रवचन के माध्यम से पारंपरिक आधार पर समकालीन प्रासंगिकता के साथ एक मौलिक सोच विकसित की जाती है। प्रस्तुत शोधपत्र एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और साथ ही दार्शनिक व्यक्तित्व के जीवन पर ध्यान केंद्रित करने का एक छोटा सा प्रयास है ताकि उनका काम समाज के बड़े हिस्से को लाभान्वित करने में सक्षम होने के लिए सार्वजनिक रूप से सामने आए।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जिन्हें प्यार से 'दीना' कहा जाता था, का जन्म 25 सितम्बर 1916 को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के नगला चन्द्रभान नामक गांव में हुआ था। उनके पिता भगवती प्रसाद महान ज्योतिषी पंडित हरिराम उपाध्याय के पौत्रों में से एक थे। दीनदयाल की मां रामप्यारी एक धार्मिक महिला थीं। दीना का एक छोटा भाई था, जिसका नाम शिवदयाल था, जिसे लोग प्यार से 'शिबू' कहते थे, जो दीनदयाल से दो साल छोटा था। भगवती प्रसाद रेलवे में कार्यरत थे और अपनी नौकरी के कारण वे अधिकतर समय बाहर ही रहते थे। दीनदयाल मुश्किल से ढाई साल के थे, जब उनके पिता ने उन्हें उनकी मां रामप्यारी और भाई शिवदयाल के साथ उनके नाना चुन्नीलाल शुक्ला के पास भेज दिया, जो राजस्थान के धनकिया में रेलवे में स्टेशन मास्टर के पद पर कार्यरत थे। दीनदयाल ने इतनी कम उम्र में ही अपना पैतृक घर छोड़ दिया और फिर कभी वहां नहीं लौटे।

वह मुश्किल से तीन साल के थे जब उनके पिता का निधन हो गया। उनकी विधवा माँ को अपने पति की मृत्यु का बहुत सदमा लगा। उनकी तबीयत बिगड़ती चली गई और उन्हें टीबी हो गई, जो उस समय एक लाइलाज बीमारी थी। लंबी बीमारी के बाद उनकी भी मृत्यु हो गई और वे अपने पीछे दो अनाथ बच्चे, दीनदयाल और शिवदयाल छोड़ गईं। उस समय दीनदयाल सात साल के थे और शिवदयाल पाँच साल के। उनकी माँ की मृत्यु से उन्हें गहरा सदमा लगा। नाना चुन्नीलाल शुक्ला को भी गहरा सदमा लगा। उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और दीनदयाल और शिवदयाल के साथ उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में फतेहपुर सीकरी के पास अपने पैतृक गाँव गुड़-का-मंडी आ गए। दोनों बच्चों को अपने नाना-नानी से भरपूर प्यार और स्नेह मिला।

**दीनदयाल और शिवदयाल क्रमशः** नौ और सात वर्ष के हो गए, लेकिन घर की चिंताओं और विषम परिस्थितियों के कारण उनकी स्कूली शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी। जुलाई 1925 में, चूनी लाई ने दोनों बच्चों को उनके चाचा राधा रमन के साथ राजस्थान के गंगापुर में स्कूली शिक्षा के लिए भेज दिया। दीनदयाल को प्राथमिक कक्षा में भर्ती कराया गया और उनकी नियमित स्कूली शिक्षा शुरू हुई। सितंबर 1926 में चूनी लाई की भी मृत्यु हो गई। दीनदयाल को बहुत दुख पहुंचा और उनके चाचा राधा रमन ने उनकी देखभाल की।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

राधा रमण भी क्षय रोग के शिकार हो गए। वे इलाज के लिए लखनऊ गए। बमुश्किल ग्यारह साल की उम्र में दीनदयाल ने अपने चाचा की बहुत देखभाल की। राधा रमण का स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधरने लगा। मार्च 1927 में दीनदयाल गंगापुर लौट आए और अपनी पढ़ाई जारी रखी। वे अपनी कक्षा में प्रथम आए। उन्होंने गंगापुर से चौथी कक्षा पास की। अगस्त 1929 में वे आगे की पढ़ाई के लिए राजस्थान के कोटला चले गए और वहीं सातवीं कक्षा तक पढ़ाई की। 1932 में वे राजस्थान के अलवर जिले के राजगढ़ चले गए, जहां से उन्होंने आठवीं और नौवीं कक्षा पास की।

दीनदयाल जब नौवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, तभी उनके छोटे भाई शिवदयाल गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। उनके जीवन को बचाने के सभी प्रयास किए गए लेकिन व्यर्थ रहे और नवंबर 1934 में टाइफाइड से उनकी मृत्यु हो गई। इस घटना ने दीनदयाल को बिल्कुल अकेला कर दिया। इसी वर्ष दीनदयाल को अपनी नानी की मृत्यु से एक और दुखद झटका लगा। राधा रमण अपने स्थानांतरण के बाद राजस्थान के सीकर आ गए। दीनदयाल अपने चाचा के साथ वहां कल्याण हाई स्कूल में दाखिले के लिए गए। उन्होंने अजमेर बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन द्वारा आयोजित दसवीं कक्षा की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में स्थान प्राप्त किया, हर विषय में विशेष योग्यता हासिल की और अंकों का नया कीर्तिमान स्थापित किया। उनकी सफलता के लिए सीकर के महाराजा कल्याण सिंह ने उन्हें स्वर्ण पदक, पुस्तकों के लिए ढाई सौ रुपये और दस रुपये मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की। दीनदयाल 1935 में इंटरमीडिएट की शिक्षा के लिए पिलानी गए। उन्होंने बिरला कॉलेज पिलानी में प्रवेश लिया। यहां उन्होंने अपने साथी छात्रों को पढ़ाई में मार्गदर्शन देने के लिए 'जीरो एसोसिएशन' की स्थापना की, जो हाउस परीक्षा में एक भी अंक प्राप्त करने में असफल रहे। 1937 में उन्होंने इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षा हर विषय में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की और फिर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। उनकी उपलब्धि से प्रसन्न होकर घनश्याम दास बिड़ला ने, सीकर के महाराजा की तरह, दीनदयाल को एक स्वर्ण पदक, ढाई सौ रुपये और दस रुपये मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की। आगे की पढ़ाई के लिए दीनदयाल कानपुर चले गए और 'सनातन धर्म कॉलेज' में दाखिला ले लिया। वह कॉलेज के छात्रावास में रहे, और सुंदर सिंह भंडारी" और बलवंत महाशब्दे से उनकी मित्रता हो गई।" बाद के आग्रह पर दीनदयाल 1937 में आरएसएस में शामिल हो गए। वह आरएसएस के संस्थापक डॉ हेडगेवार के संपर्क में आए। धीरे-धीरे आरएसएस की गतिविधियों में उनकी रुचि बढ़ी और उन्होंने इस संगठन को समय देना शुरू कर दिया। इस प्रकार,

दीनदयाल ने अपना सार्वजनिक जीवन कानपुर से शुरू किया। उन्होंने 1939 में प्रथम श्रेणी में बी.ए. पास किया और अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर करने के लिए आगरा के सेंट जोन्स कॉलेज में दाखिला लिया। उन्होंने

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

आर.एस.एस. में भी अपनी गतिविधियाँ जारी रखीं। उन्होंने एम.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान उनकी चचेरी बहन रमा देवी गंभीर रूप से बीमार पड़ गईं और उन्हें इलाज के लिए आगरा ले जाया गया। दीनदयाल ने उनकी देखभाल की जिम्मेदारी ली। उनकी जान बचाने के सभी प्रयास व्यर्थ साबित हुए। दीनदयाल बहुत दुखी और उदास रहने लगे। वे अपनी पढ़ाई के लिए समय नहीं दे पाए और एम.ए. द्वितीय वर्ष की परीक्षा में शामिल नहीं हुए। उनकी पढ़ाई बाधित हो गई। उनके चाचा राधा रमन उनकी एम.ए. की पढ़ाई बंद होने से खुश नहीं थे। उन्होंने दीनदयाल को प्रशासनिक सेवा परीक्षा में बैठने के लिए कहा। दीनदयाल ने सफलतापूर्वक परीक्षा उत्तीर्ण की। "जब वे साक्षात्कार के लिए गए तो अन्य सभी अभ्यर्थी बढ़िया सूट पहने हुए थे, जबकि वे अकेले धोती-कुर्ता और सिर पर टोपी पहने हुए थे। अभ्यर्थियों ने उनका मजाक उड़ाया और कहा, 'पंडितजी आए हैं।' यह पहली बार था जब उन्हें पंडितजी कहा गया। वे चयनित अभ्यर्थियों की सूची में सबसे ऊपर थे, लेकिन उन्होंने सेवा में प्रवेश नहीं लिया। सरकारी नौकरी में उनका कोई आकर्षण नहीं था। अपने चाचा दीनदयाल के आग्रह पर उन्होंने परयाग में बी.टी. पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। वे छात्रावास में रहे और आर.एस.एस. के काम में भी लगे रहे। उन्होंने 1941 में बी.टी. उत्तीर्ण की और यह उनके शैक्षणिक जीवन की अंतिम डिग्री थी।

उनके चाचा ने उन्हें सलाह दी कि वे कोई अच्छी नौकरी कर लें और विवाह कर लें। दीनदयाल एक मेधावी छात्र थे। उन्हें नौकरी पाने और आरामदायक जीवन जीने के अवसर मिले। उन्हें एक प्रशासनिक पद के लिए चुना गया और उन्हें एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक की नौकरी की पेशकश की गई, लेकिन उन्होंने इस प्रस्ताव में रुचि नहीं दिखाई। बापूराव मोघे लिखते हैं, "जब उन्होंने (दीनदयाल ने) रुचि नहीं दिखाई तो स्कूल समिति ने सोचा कि शायद शुरुआती वेतन उनके लिए पर्याप्त नहीं है। इसलिए उन्हें शुरू में तीन या चार वेतन वृद्धि की पेशकश की गई। हालांकि, दीनदयाल ने एक उल्लेखनीय उत्तर दिया: "मेरी आवश्यकताएँ दो धोती, दो कुर्ते और दिन में दो बार भोजन हैं। इसके लिए मुझे प्रति माह 30 रुपये से अधिक की आवश्यकता नहीं है। आप जो इतने पैसे दे रहे हैं, उनका मैं क्या करूँगा? इस प्रकार दीनदयाल ने प्रधानाध्यापक बनने के असाधारण अवसर को ठुकरा दिया। इससे न केवल उनके दृढ़ निश्चय का पता चला, बल्कि उनके त्याग की असाधारण भावना का भी पता चला।

अब सवाल यह उठता है कि उन्होंने नौकरी ठुकराने का फैसला क्यों किया और उनके जीवन का उद्देश्य क्या था? ऐसा माना जाता है कि दीनदयाल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रभावित थे और कॉलेज के दिनों से ही इसकी गतिविधियों से जुड़े रहे। उन्होंने संघ के लिए काम करने का मन बना लिया। शुरू में वे नौकरी करने के

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

साथ-साथ संघ के संगठनात्मक कार्यों में भी अपनी ऊर्जा लगाना चाहते थे। उन्होंने लिखा, "मैं भी पहले किसी स्कूल में नौकरी करने और साथ ही साथ संघ के काम को करने के बारे में सोच रहा था। लखनऊ आने पर मैं इसी बारे में सोच रहा था।" उन्होंने आगे कहा, "लेकिन लखनऊ में मैं मौजूदा स्थिति का अध्ययन करने और आगे के व्यापक कार्य क्षेत्र का अंदाजा लगाने में सक्षम था, और मुझे सलाह मिली कि एक विशेष शहर में काम करने के बजाय मुझे पूरे जिले में काम करना होगा। इस तरह से निष्क्रिय हिंदू समाज में उपलब्ध कार्यकर्ताओं की कमी को पूरा किया जाना है।

वह उस समय देश में व्याप्त परिस्थितियों से व्यथित थे। इस प्रकार उन्होंने टिप्पणी की, "भारत के सर्वोच्च व्यक्तित्व का मामला लें और फिर उस वास्तविक स्थिति पर विचार करें जिसमें वह खुद को पाते हैं। मुस्लिम गुंडे एक ही झटके में सर्वोच्च नागरिक के सम्मान और प्रतिष्ठा को कलंकित कर सकते हैं... हमारी बहनों और बेटियों को मुसलमान उठा ले जाते हैं, वे दिन-दहाड़े ब्रिटिश सैनिकों के हमलों का शिकार होती हैं और हम, जो अपने सम्मान और समाज में अपने ऊंचे स्थान का बखान करते नहीं थकते, पूरी तरह असहाय होकर देखते रहने को बाध्य हैं। हम यह सब रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकते। हम जो कुछ भी कर सकते हैं, वह यह है कि इसे अखबारों में सनसनीखेज समाचार के रूप में बैनर हेडलाइन के तहत प्रकाशित करें। या, इसे महात्माजी द्वारा हरिजन में लिखे गए लेख में दर्शाया जा सकता है। दीनदयाल के अनुसार, ऐसा इसलिए था क्योंकि हमारा समाज कमजोर और पतित था, शक्तिहीन और स्वार्थ में डूबा हुआ था। हम में से हर कोई अपने निजी हितों में लिप्त है और केवल अपने बारे में सोचने के लिए इच्छुक है। यदि कोई व्यक्ति टपकती हुई नाव में सवार है, तो वह अपना बोझ अपने सिर से जितना संभव हो उतना ऊपर ले जा सकता है, लेकिन यह उसके साथ डूबने के लिए बाध्य है। हिंदू समाज आज खुद को इसी स्थिति में पाता है। समय की मांग पर जोर देते हुए उन्होंने कहा, "आज, हाथ में भीख का कटोरा लेकर, समाज हमसे भीख मांग रहा है। अगर हम इसकी मांगों के प्रति उदासीन बने रहे तो एक दिन ऐसा आ सकता है जब हमें न चाहते हुए भी, उस बहुत बड़ी चीज से अलग होना पड़े जिसे हम सबसे ज्यादा प्यार करते हैं।"

उपरोक्त परिस्थितियों को देखते हुए दीनदयाल जी देश के उत्थान के लिए अपनी सेवाएं देना चाहते थे, ताकि देश बलवान, वीर, सशक्त और समृद्ध बने। उनके अनुसार देश को सशक्त बनाने का एकमात्र उपाय है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों और सिद्धांतों के अनुरूप समाज को संगठित करना। दीनदयाल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से बहुत प्रभावित और प्रेरित थे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए काम करने का दृढ़ निश्चय किया, लेकिन जब उन्होंने महसूस किया कि वे नौकरी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य दोनों ही जिम्मेदारियों को एक साथ संतोषजनक ढंग से नहीं निभा सकते, तो उन्होंने जीवन में एक विशिष्ट

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

उद्देश्य के साथ अपना पूरा जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य और मिशन के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने नौकरी करने का विचार त्याग दिया और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य ही उनकी प्राथमिकता और जीवन का उद्देश्य बन गया। शांति भूषण ने लिखा है, "दीनदयाल जी हमेशा अपना जीवन देश को समर्पित करना चाहते थे, क्योंकि उनका मानना था कि देश परतंत्र रहते हुए सरकारी नौकरी करके देश की सेवा संभव नहीं है। इसलिए उन्होंने अपना जीवन देश की सेवा के लिए समर्पित कर दिया और इसके लिए उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को माध्यम चुना।"

यह उल्लेखनीय है कि चालीस के दशक में जब वे आरएसएस के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बने, उस समय भारत में स्वतंत्रता संग्राम अपने चरम पर था। दीनदयाल विदेशी शासन के खिलाफ थे; हालांकि उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम में भाग नहीं लिया। वे आरएसएस के कार्यक्रम और नीति के अनुसार हिंदू समाज को संगठित करने के उद्देश्य को साकार करने के लिए बेहद चिंतित थे। उनके लिए, आरएसएस के काम को मजबूत करने से सर्वांगीण सामाजिक विकास के वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इसलिए, उन्होंने खुद को उत्साहपूर्वक और लगन से आरएसएस के लिए समर्पित कर दिया और एक अलग जीवन शैली को प्राथमिकता दी।

वर्ष 1940 में मुस्लिम कट्टरपंथ बहुत तीव्र था। मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए अलग राज्य की मांग की। दीनदयाल ने भारत के विभाजन की मांग का विरोध किया। उन्होंने मुस्लिम कट्टरपंथ का मुकाबला करने और हिंदू समाज को एकीकृत करने के लिए काम किया। आर.एस.एस. के संस्थापक डॉ. हेडगेवार का 1940 में निधन हो गया। माधव सदाशिवराव गोलवलकर आर.एस.एस. के सुप्रीमो बने। दीनदयाल ने उनके नेतृत्व में काम किया। उन्होंने 1944 तक उत्तर प्रदेश के लखमीपुर जिले में आर.एस.एस. के प्रचारक (संगठक) के रूप में काम किया और उत्तर प्रदेश में आर.एस.एस. के संगठनात्मक पदानुक्रम में संयुक्त प्रांतीय आयोजक के रूप में पदोन्नत हुए और 1951 तक जारी रहे। उन्होंने आर.एस.एस. को मजबूत करने के लिए बहुत काम किया और प्रयास किया। संगठनात्मक पदानुक्रम के विभिन्न पदों पर रहते हुए, उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत, समर्पण, ईमानदारी, संगठन कौशल और क्षमता, आर.एस.एस. के प्रति निष्ठा और प्रतिबद्धता के कारण संगठन में ख्याति और प्रशंसा अर्जित की। नानाजी देशमुख ने लिखा है, "दीनदयाल जी बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। वे असाधारण सफल संगठनकर्ता थे तथा लोगों को एक साथ रखने की उनमें क्षमता थी। उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्थान और विकास में उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी।"

दीनदयाल उपाध्याय ने विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से अकादमिक प्रतिभा का प्रदर्शन करके राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों को आगे बढ़ाते हुए संगठनात्मक कार्यों को आगे बढ़ाया। 1945 में उन्होंने लखनऊ

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

में "राष्ट्र धर्म प्रकाशन" की स्थापना की और मासिक पत्रिका राष्ट्र धर्म की शुरुआत की। उन्होंने 1948 में साप्ताहिक पंचजन्य और 1949-50 के दौरान दैनिक स्वदेश की भी शुरुआत की। इन पत्रिकाओं में से केवल पंचजन्य को ही अखिल भारतीय साप्ताहिक पत्रिका का दर्जा प्राप्त हुआ और अब यह दिल्ली से प्रकाशित होता है। मासिक, राष्ट्र धर्म लखनऊ से प्रकाशित होता रहा, लेकिन दैनिक स्वदेश की जगह तरुण भारत ने ले ली और अब यह लखनऊ से प्रकाशित होता है। दीनदयाल उपाध्याय ने सम्राट चंद्रगुप्त और जगत गुरु शंकराचार्य नामक दो पुस्तकें लिखीं, जो क्रमशः 1946 और 1947 में प्रकाशित हुईं। बाद में, उन्होंने कई दार्शनिक निबंधों और भाषणों में अपने विचार व्यक्त किए, जो एकात्म मानववाद, राष्ट्र जीवन की दिशा जैसी पुस्तकों और पुस्तिकाओं में शामिल हैं। भारतीय अर्थ नीति विकास की एक दिशा, अखंड भारत और मुस्लिम समसामय, हिंदू संस्कृति की विशिष्टता, दो योजनाएं, राजनीतिक डायरी, अवमूल्यन: एक महान पतन, उनका अध्यक्षीय भाषण, आदि।

1947 में भारत को आजादी मिली. सरकार का नेतृत्व कांग्रेस पार्टी ने किया।

कांग्रेस और आरएसएस के बीच कुछ मुद्दों पर मतभेद उभर कर सामने आए। महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद, कांग्रेस और आरएसएस के बीच संबंध बहुत खराब हो गए। आरएसएस पर महात्मा गांधी की हत्या का आरोप लगाया गया, लेकिन इसके नेताओं ने इस जघन्य अपराध में किसी भी तरह की संलिप्तता से इनकार किया। सरकार ने आरएसएस पर प्रतिबंध लगा दिया और जांच के आदेश दिए। आरोप साबित नहीं हुआ; इसलिए, आरएसएस और इसकी गतिविधियों पर प्रतिबंध हटा दिया गया। लेकिन आरएसएस और कांग्रेस के बीच मतभेद अभी भी बढ़ते रहे, और 1950 में इसका चरमोत्कर्ष आया। 8 अप्रैल, 1950 को नेहरू लियाकत अली समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। आरएसएस ने इस समझौते को एकतरफा करार दिया। सरकार पर भारतीय हितों को पाकिस्तान के हवाले करने का आरोप लगाया गया। आरएसएस ने इस समझौते का पुरजोर विरोध किया।

नेहरू सरकार में उद्योग मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भी इस समझौते का कड़ा विरोध किया। उन्होंने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया और विपक्ष में शामिल हो गए। डॉ. मुखर्जी ने सरकार की तीखी आलोचना शुरू कर दी और मांग की कि कश्मीर को विलय के साधन के तहत गारंटीकृत विशेषाधिकारों के बिना भारत का अभिन्न अंग घोषित किया जाए। उन्हें अखिल भारतीय स्तर पर कांग्रेस का विकल्प बनाने की आवश्यकता महसूस होने लगी। आर.एस.एस. को भी भारत में एक राजनीतिक दल बनाने की आवश्यकता महसूस हुई, जो सामान्य रूप से राजनीतिक क्षेत्र में और विशेष रूप से विधायिका में अपने हितों की रक्षा कर सके। वसंत नार्गोलकर ने लिखा है, ऐसा लगता है कि जो लोग हिंदू हितों की रक्षा करना चाहते थे और विशेष रूप से हिंदू

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

संस्कृति को बढ़ावा देना चाहते थे, उन्हें चुनावों और विधायिका में प्रतिनिधित्व के माध्यम से अपने विचारों का प्रचार करने के लिए एक राजनीतिक मोर्चे की आवश्यकता महसूस होने लगी। दीनदयाल स्वयं उनमें से एक थे। इस कार्य को करने के लिए समर्पित युवाओं की आवश्यकता थी। दीनदयाल को आर.एस.एस. में बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति माना जाता था। उन्हें भविष्य का निर्माता और राजनीतिक क्षेत्र में आरएसएस के सिद्धांतों और कार्यक्रमों को लागू करने और बढ़ावा देने का माध्यम माना जाता था। इसलिए, दीनदयाल और कुछ अन्य चुने हुए कार्यकर्ताओं को डॉ.

एस.पी. मुखर्जी। ऐसा माना जाता है कि दीनदयाल की राजनीति में कोई रुचि नहीं थी। इस तथ्य को उजागर करते हुए एम.एस. गोलवरकर ने टिप्पणी की है, "दीनदयाल जी का राजनीति की ओर जरा भी झुकाव नहीं था। पिछले वर्षों में उन्होंने मुझसे कई बार कहा था: आपने मुझे इस घिनौने काम में डाल दिया है। मुझे फिर से प्रचारक का काम करने की अनुमति दीजिए।" मैंने कहा, मैं और किसे इस घिनौने काम में डाल सकता हूं? केवल वही व्यक्ति, जो संगठन कार्य में इतना गहरा और अटूट विश्वास रखता हो, इस घिनौने काम में रहकर भी इससे अप्रभावित रह सकता है; वही इसे साफ कर सकता है। कोई और ऐसा नहीं कर सकता। फिर भी, एम.एस. गोलवरकर के आग्रह पर वे एक राजनीतिक दल में शामिल हो गए। सितंबर 1951 में दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. एस.पी. मुखर्जी ने लखनऊ में भारतीय जनसंघ की उत्तर प्रदेश इकाई का शुभारंभ किया। एक महीने बाद, 21 अक्टूबर, 1951 को अखिल भारतीय भारतीय जनसंघ बनाने के लिए दिल्ली में एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया। डॉ. एस.पी. मुखर्जी इसके संस्थापक अध्यक्ष चुने गए। 29-31 दिसंबर 1952 को कानपुर में भारतीय जनसंघ का अधिवेशन हुआ। दीनदयाल इसके महासचिव बनाए गए। भारतीय जनसंघ के इस अधिवेशन में दीनदयाल को कश्मीर पर सत्याग्रह चलाने की जिम्मेदारी भी सौंपी गई। यह आंदोलन एक विधान, एक निशान, एक प्रधान के नारे के साथ शुरू हुआ। यह आंदोलन भारतीय संविधान के अधिनियम 370 के खिलाफ था, जो जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देता है। डॉ. मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर की ओर सत्याग्रहियों के एक जत्थे का नेतृत्व किया। उन्हें गिरफ्तार कर श्रीनगर जेल में डाल दिया गया, जहां कुछ दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई।

दीनदयाल ने भारतीय जनसंघ के महासचिव के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान संसदीय चुनाव भी लड़ा। उन्होंने जोनपुर संसदीय क्षेत्र से 1963 का उपचुनाव लड़ा, लेकिन वे असफल रहे। इस वर्ष उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और कुछ यूरोपीय और अफ्रीकी देशों का दौरा भी किया। अपने दौरे के दौरान उन्होंने विभिन्न लोगों से मुलाकात की और प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया। उन्होंने अफ्रीका के नैरोबी में आरएसएस के वार्षिक समारोह को संबोधित किया। अगस्त, 1964 में उन्होंने ग्वालियर में आयोजित भारतीय जनसंघ के पांच

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

दिवसीय अध्ययन शिविर में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज "एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ कार्यक्रम का आधार" जारी किया। "सिद्धांत और नीति" का वक्तव्य, जिसमें दीनदयाल उपाध्याय द्वारा तैयार दस्तावेज के उद्धरण शामिल हैं, को भारतीय जनसंघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ने 23-25 जनवरी, 1965 को विजयवाड़ा में आयोजित अपनी बैठक में अपनाया था। उनके एकात्म मानववाद के विभिन्न सिद्धांत 22-25 अप्रैल, 1965 को मुंबई में उनके द्वारा दिए गए चार व्याख्यानों में समाहित थे।

30 जून 1965 को भारत और पाकिस्तान ने कच्छ समझौते पर हस्ताक्षर किए। दीनदयाल ने इस समझौते का विरोध किया और सरकार पर दबाव बनाने के लिए समझौते के खिलाफ 'दिल्ली चलो' अभियान चलाया। उन्होंने 16 अगस्त 1965 को दिल्ली में इसके खिलाफ प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा, "यह राष्ट्रीय अधिकारों और हितों के साथ घोर विश्वासघात है। इसकी शर्तें एक स्वाभिमानी राष्ट्र के लिए अपमानजनक हैं। उन्होंने आगे कहा, "यदि न्यायाधिकरण भारत के खिलाफ फैसला सुनाता है तो सरकार क्या करेगी? क्या वे समझौते से पीछे हटेंगे या 3500 वर्ग मील भारतीय क्षेत्र पाकिस्तान को सौंप देंगे।

दीनदयाल उपाध्याय पंद्रह साल (1953-67) तक भारतीय जनसंघ के महासचिव रहे। संस्थापक अध्यक्ष की मृत्यु के बाद, 29-31 दिसंबर, 1967 को आयोजित भारतीय जनसंघ के कालीकट अधिवेशन में दीनदयाल को अध्यक्ष पद पर पदोन्नत किया गया। भारतीय जनसंघ को लंबे समय तक अध्यक्ष के रूप में उनका नेतृत्व नहीं मिल सका। 11 फरवरी, 1968 को मुगलसराय में उनका शव मिला। कथित तौर पर उनकी हत्या कर दी गई थी और उनकी मौत का रहस्य अभी भी अनसुलझा है। दीनदयाल केवल तैंतालीस दिनों तक भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे।

उनके अथक प्रयासों ने भारतीय जनसंघ को एक मजबूत राजनीतिक ताकत बना दिया। हालांकि, उन्हें किसी राजनीतिक दल में काम करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी उन्होंने पूरे भारत में भारतीय जनसंघ के नेटवर्क को बनाने और मजबूत करने के लिए अपने कर्तव्यों का प्रभावी ढंग से निर्वहन किया। सुंदर सिंह भंडारी ने कहा है, "भारतीय जनसंघ अपनी संगठनात्मक ताकत के लिए प्रसिद्ध हुआ। इस प्रतिष्ठा का श्रेय मुख्य रूप से दीनदयाल जी को जाता है। उन्होंने इसे ईंट-दर-ईंट, इकाई-दर-इकाई खड़ा करके जनसंघ को ताकत का किला बनाया और इसे प्रतिष्ठा दी। यह उनकी जबरदस्त लगन और लोगों से संपर्क करने की अटूट क्षमता थी जिसने जनसंघ के लिए देशव्यापी संगठनात्मक नेटवर्क बुना।

दीनदयाल के प्रयासों को भारत के राजनीतिक जीवन में व्यापक रूप से सराहा जाता है। उन्होंने न केवल एक ईमानदार और समर्पित कार्यकर्ता के रूप में बल्कि पार्टी के एक अग्रणी विचारक के रूप में भी ख्याति अर्जित की। वह हाथी दांत के टॉवर में एक आरामकुर्सी दार्शनिक नहीं थे, बल्कि एक राजनीतिक पार्टी के एक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

महत्वपूर्ण कार्यकर्ता और विचारक भी थे, जो अपने विचारों को वास्तविकता में बदलने में रुचि रखते थे। उन्होंने कहा, "हमारे सामने इस देश के महान भविष्य की एक कल्पना है; हम केवल दूरदर्शी नहीं हैं, बल्कि कर्मयोगी हैं, जो अपनी कल्पना को वास्तविकता में बदलने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

कुछ विद्वानों ने दीनदयाल उपाध्याय के विचारों और विचारों पर ध्यान दिया है। शोध के विषय पर चर्चा शुरू करने से पहले उन पर किए गए कार्यों को जानना आवश्यक होगा। सुधाकर राजे द्वारा संपादित पं. दीनदयाल उपाध्याय: एक परिचय में चौदह अध्याय हैं। विभिन्न विद्वानों ने दीनदयाल के जीवन और विचारों के विभिन्न पहलुओं पर अपना योगदान दिया है। यह कार्य उनकी जीवनी और देश के प्रमुख व्यक्तियों और प्रमुख समाचार पत्रों द्वारा उनकी दुखद मृत्यु पर उन्हें दी गई कुछ चुनिंदा श्रद्धांजलि से शुरू होता है।

एम.एस. गोलवलकर ने "आदर्श स्वयंसेवक" में दीनदयाल को बहुमुखी प्रतिभा वाले एक समर्पित और ईमानदार कार्यकर्ता के रूप में वर्णित किया है, जिन्होंने अपनी ऊर्जा और जीवन को आर.एस.एस. के मिशन के लिए समर्पित कर दिया। डी.बी. ठेंगड़ी ने "एकात्म मानववादी" में मनुष्य, समाज और राष्ट्र पर उनके विचारों की चर्चा की है। उन्होंने एकात्म मानववाद के उनके दर्शन की भी संक्षिप्त जांच की है। जगदीश प्रसाद माथुर ने तर्क दिया है कि दीनदयाल के विचारों का आधार उनके देश के इतिहास और परंपरा में निहित था। माथुर ने उन्हें एक मौलिक और व्यापक विचारक माना है। सत्यव्रत सिन्हा ने अपने शोधपत्र, "गांधी, लोहिया और दीनदयाल" में तीनों के जीवन और दर्शन का अध्ययन करने का प्रयास किया है। धर्मवीर भारती ने उन्हें उनके कार्य और विचार में एक शुद्ध भारतीय कहा है, जबकि के.आर.मलकानी ने उनमें देवदूत जैसे गुण देखे हैं। मलकानी ने तर्क दिया है कि दीनदयाल उच्च गुणों और असाधारण गुणों वाले व्यक्ति थे और सामान्य मनुष्यों से ऊपर थे। तेरहवें अध्याय में 21 जुलाई 1942 को लखीमपुर से अपने मामा को लिखा गया दीनदयाल का एक यादगार पत्र है, जिसमें उन्होंने बताया है कि वे आरएसएस के प्रचारक क्यों बने। अंतिम अध्याय में दीनदयाल के कुछ चुनिंदा विचार हैं, जो उनके एकात्म मानववाद के दर्शन की झलक देते हैं।

**उपाध्याय का एकात्म मानववाद:** अवधारणाएँ और इसके अनुप्रयोग डॉ. महेश जे. मेहता द्वारा संपादित कृति है, जिसमें पाँच खंड हैं। पहले खंड, "दीनदयाल उपाध्याय: द मैन" में पाँच शोधपत्र हैं। इस खंड में लेखकों ने दीनदयाल के जीवन, व्यक्तित्व और उन पर उनके विचारों और उनके विचारों के प्रभावों का वर्णन किया है। नॉर्मन डी. पामर ने उन्हें एक दयालु, सौम्य, सादगी की आत्मा और एक निस्वार्थ व्यक्ति के रूप में वर्णित किया है, जिसमें उल्लेखनीय रूप से अहंकार की कमी थी, जिन्होंने एक आदर्श जीवन व्यतीत किया। पामर ने दीनदयाल को एक उत्साही पाठक के रूप में माना है, जो हमेशा एक छात्र और एक कुशल आयोजक थे, लेकिन एक अनिच्छुक राजनीतिज्ञ थे। उनके अनुसार, दीनदयाल एक सच्चे लोकतंत्रवादी और आधुनिक और

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

व्यापक दृष्टिकोण वाले एक बुनियादी विचारक थे। संक्षेप में, यह तर्क दिया जाता है कि दीनदयाल एक बहुमुखी व्यक्तित्व थे। दूसरे खंड में तीन शोधपत्र हैं, अर्थात। "सामाजिक सिद्धांतों पर विचार: एकात्म दृष्टिकोण", "एकात्म मानव: सार्वभौमिक कानून", तथा "मानवीय सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था।" इन शोधपत्रों में दीनदयाल उपाध्याय के मानवतावादी विचारों को उजागर करने, उनकी व्याख्या करने तथा उनकी जांच करने का प्रयास किया गया है। तीसरा खंड, "अर्थशास्त्र और एकात्म मानववाद" दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों का अध्ययन है। "एकात्म मानववाद में आर्थिक परिप्रेक्ष्य" नामक शोधपत्र में डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी ने तर्क दिया है कि दीनदयाल के आर्थिक विचार पूंजीवादी और साम्यवादी विचारधाराओं से भिन्न थे। स्वामी ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि दीनदयाल उपर्युक्त विचारधाराओं पर आधारित आर्थिक मॉडलों के आलोचक थे तथा उन्होंने मनुष्य, समाज और संपूर्ण मानवता की आवश्यकता के लिए एक वैकल्पिक आर्थिक सोच का सुझाव दिया है। ऐसा आर्थिक मॉडल दीनदयाल द्वारा परिकल्पित एकात्म मानववाद के व्यापक दर्शन में अंतर्निहित है। चौथे खंड, "राजनीतिक सिद्धांत और एकात्म मानववाद" में पाँच शोधपत्र हैं। इस खंड में लेखकों ने दीनदयाल के दर्शन के राजनीतिक पहलुओं को समझाने, व्याख्या करने और कल्पना करने का प्रयास किया है। दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक दर्शन में, डॉ वाल्टर के। एंडरसन ने तर्क दिया है कि राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और समाजवाद अच्छे जीवन की मानव खोज का केवल आंशिक समाधान प्रदान करते हैं। राष्ट्रवाद विश्व शांति के लिए खतरा है। जब लोकतंत्र पूंजीवाद से जुड़ जाता है तो शोषण को बढ़ावा मिलता है। समाजवाद व्यक्ति से सम्मान और स्वतंत्रता छीन लेता है। इनमें से प्रत्येक राजनीतिक अवधारणा भौतिक अधिग्रहण को बढ़ाती है और लालच, वर्ग विरोध, शोषण और सामाजिक अराजकता को बढ़ावा देती है। एंडरसन ने जोर देकर कहा है कि दीनदयाल के राजनीतिक विचार व्यक्ति, समाज और मानवता के हितों के पारस्परिक सहयोग और पूरकता को बढ़ावा देते हैं। पुस्तक का अंतिम भाग दीनदयाल और महात्मा गांधी के विचारों के बीच समानता और अंतर के विभिन्न बिंदुओं से संबंधित है।

गांधी, लोहिया और दीनदयाल" कुछ निबंधों का संग्रह है, जो दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित एक निबंध प्रतियोगिता में प्रस्तुत किया गया था, जिसका विषय था "महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया और दीनदयाल उपाध्याय का सामान्य आधार, व्यक्ति, मिशन और संदेश पर विशेष जोर।" विभिन्न निबंधकारों ने तीनों के बीच समानता के विभिन्न बिंदुओं की खोज की है। प्राक्कथन में प्रो. मधु दंडवते ने टिप्पणी की है, "गांधी ने राम राज्य का सपना देखा था। उनके लिए राम और रहीम सत्य, अच्छाई और सद्भाव के एक ही तत्व की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ थे। बहुत कम लोग जानते हैं कि डॉ॰ राम मनोहर लोहिया जैसे समाजवादी ने भी रामायण और महाभारत से बहुत प्रेरणा प्राप्त की थी और आधुनिक विश्व की समस्याओं के संदर्भ में राम, कृष्ण

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

और शिव की भूमिकाओं पर अपनी दिलचस्प और अपरंपरागत व्याख्या की थी। दीनदयाल उपाध्याय के विचार गीता, उपनिषद और महाभारत के पवित्र ग्रंथ थे।" विभिन्न निबंधकारों ने तर्क दिया है कि उपरोक्त विचारकों के विचार सदियों पुरानी भारतीय परंपरा और ज्ञान से प्रभावित थे, और मानवता की वर्तमान स्थितियों और समस्याओं के संदर्भ में उभरे थे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारधारा और धारणा सात भागों में विभाजित है, जो विभिन्न लेखकों द्वारा लिखे गए हैं। पहला भाग जिसका शीर्षक है 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारधारा और धारणा: एक अतिथि', डी.बी. ठेंगड़ी द्वारा लिखा गया है। यह एक परिचयात्मक भाग है, जो मुख्य रूप से दीनदयाल के जीवन इतिहास से संबंधित है। लेखक ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में दीनदयाल की भूमिका और राजनीति में उनके योगदान, विशेष रूप से भारतीय जनसंघ के विकास में उनके योगदान पर प्रकाश डाला है। ठेंगड़ी ने तर्क दिया है कि दीनदयाल ने पश्चिमी विचारों के अंधाधुंध अनुकरण की निंदा की और मनुष्य और मानवता की समस्याओं को हल करने के लिए भारतीय परंपराओं और मूल्यों को देखा। पुस्तक के समापन भाग में कुछ परिशिष्ट दिए गए हैं, जो दीनदयाल के जीवन के आदर्शों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दर्शाते हैं।

दूसरे भाग में पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारधारा और धारणा: एकात्म मानववाद में वी.वी. नेने ने राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और समाजवाद जैसी कुछ महत्वपूर्ण पश्चिमी अवधारणाओं पर चर्चा की है और इन अवधारणाओं के संदर्भ में दीनदयाल के विचारों का विश्लेषण किया है। उन्होंने दीनदयाल के एकात्म मानववाद के दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है।

**पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारधारा और धारणा:** राजनीतिक चिंतन तीसरा भाग है, जिसे बी.के. केलकर ने लिखा है। लेखक ने बी.जे.एस. के जन्म और विकास की कहानी और राष्ट्रीय जीवन के बारे में उनके विचारों का वर्णन किया है। उन्होंने दीनदयाल को बी.जे.एस. का एक बुनियादी और कुशल विचारक माना है, जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक स्वतंत्रता पर जोर दिया। केलकर ने दीनदयाल के सार्वजनिक जीवन के बारे में भी कुछ विवरण दिए हैं। उन्होंने दीनदयाल को न केवल जनसंघ के सिद्धांतकार के रूप में बल्कि एक 'पार्टी आयोजक' के रूप में भी चर्चा की है। अंत में, लेखक ने दीनदयाल उपाध्याय की विरासत पर चर्चा की है।

शरद ए. कुलकर्णी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारधारा और धारणा पर श्रृंखला के चौथे भाग में पूंजीवाद, साम्यवाद और समाजवाद जैसे प्रचलित सिद्धांतों के संदर्भ में दीनदयाल उपाध्याय की एकात्म आर्थिक नीति पर चर्चा की है। उन्होंने योजना प्राथमिकताओं, कृषि और आत्मनिर्भरता, औद्योगीकरण के लक्ष्य, आर्थिक अनुशासन के माध्यम से पूंजी निर्माण, स्वदेशी, विदेशी सहायता के आयाम, राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों, मूल्य निर्धारण और कराधान उपायों आदि पर दीनदयाल के विचारों का वर्णन किया है। लेखक ने तर्क दिया है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

कि दीनदयाल के आर्थिक विचार और दर्शन मनुष्य और मानव जाति के सामने आने वाली कई समस्याओं को हल करने में मदद कर सकते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारधारा और धारणा के पांचवें भाग में, सी.पी. भिशीकर ने दीनदयाल की राष्ट्र की अवधारणा पर चर्चा की है। उन्होंने देखा है कि उपाध्याय हिंदू राष्ट्र के समर्थक थे, जिनकी सदियों पुरानी हिंदू संस्कृति में दृढ़ आस्था थी। हालाँकि, लेखक के अनुसार दीनदयाल के हिंदू राष्ट्र के दावे में कोई प्रतिक्रियावादी तत्व नहीं है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारधारा और धारणा: राष्ट्र के लिए राजनीति, जो छठे भाग का गठन करती है, बी. एन. जोग द्वारा लिखित है। लेखक ने भारतीय राजनीति में उनके द्वारा पेश किए गए नए आदर्शों के संदर्भ में दीनदयाल की राजनीति की धारणा पर चर्चा की है। इसके बाद अविभाजित भारत, एक राष्ट्र और एक संस्कृति पर दीनदयाल के विचारों पर चर्चा की गई है। लेखक ने विदेश नीति और राष्ट्रवाद पर दीनदयाल के विचारों पर भी संक्षेप में चर्चा की है।

वी.एन. देवधर द्वारा लिखित सातवें भाग में दीनदयाल उपाध्याय का परिचय दिया गया है, जिसमें उनके व्यक्तित्व और विचारधारा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। लेखक के अनुसार, दीनदयाल बहुमुखी प्रतिभा वाले एक सरल व्यक्ति थे, जिन्होंने कभी भी अपने सिद्धांतों और मूल्यों से समझौता नहीं किया, जिन्हें उन्होंने मनुष्य और मानवता के लिए संजोया था। अंत में, चार परिशिष्ट हैं, जो विभिन्न पहलुओं पर दीनदयाल के विचारों को दर्शाते हैं। परिशिष्ट चार: दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्रपति अभिभाषण है, जो कालीकट में दिया गया था।

डेस्टिनेशन दीनदयाल शोध संस्थान का पहला प्रकाशन है। यह विभिन्न प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा दिए गए विचारों और शोधपत्रों का संग्रह है। यह दीनदयाल के जीवन, व्यक्तित्व और मिशन के बारे में जानकारी देता है। कुछ शोधपत्र उनके एकात्म मानववाद के दर्शन की व्याख्या और जांच भी करते हैं। अपने शोधपत्र "दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक दर्शन" में वाल्टर के. एंडरसन ने लिखा है कि उपाध्याय के अनुसार भारत में समकालीन राजनीति मनुष्य और समाज में उसकी भूमिका की आंशिक, यदि सही नहीं तो समझ पर आधारित थी। उन्होंने जोर देकर कहा कि स्वतंत्रता के बाद के भारत के राजनीतिक नेतृत्व ने अच्छे समाज की पश्चिमी धारणाओं को भारतीय परिस्थितियों में लागू करने का प्रयास किया था, और परिणाम असंतोषजनक थे। लेखक ने आगे कहा कि उपाध्याय ने प्रस्तावित किया है कि केवल भारतीय विचार ही पहेलियों का समाधान प्रदान कर सकता है। एंडरसन ने तर्क दिया है कि दीनदयाल का एकात्म मानववाद का दर्शन भारत की विशिष्ट राष्ट्रीय पहचान के अनुसार आकार लिया गया था। लेखक का मानना है कि दीनदयाल ने भारतीय राजनीतिक विचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महेश मेहता ने "दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक सिद्धांतों पर विचार: एक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

समग्र दृष्टिकोण" में व्यक्तिगत खुशी, समाज के साथ व्यक्ति के संबंध और समाज के कल्याण में राज्य की भूमिका पर दीनदयाल के विचारों पर चर्चा की है। मेहता के अनुसार, दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति और दर्शन के आदर्श को ध्यान में रखते हुए इन मुद्दों से निपटने की कोशिश की है।

डी.बी.ठेंगड़ी द्वारा लिखित पुस्तक हिज लिगेसी: अवर मिशन का विमोचन पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पांचवीं पुण्यतिथि के अवसर पर किया गया। लेखक ने दीनदयाल के जीवन से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का कालानुक्रमिक वर्णन किया है। डी.बी.ठेंगड़ी ने दीनदयाल को एक राष्ट्रवादी और एक अंतर्राष्ट्रीयवादी के रूप में भी माना है और तर्क दिया है कि उनका मानवतावाद मनुष्य, समाज और ब्रह्मांड के बीच अभिन्न एकता और परस्पर पूरकता की कल्पना करता था। लेखक ने राष्ट्र, मशीनीकरण, नियोजन, समाजवाद और पूंजीवाद जैसे मुद्दों पर दीनदयाल के विचारों पर भी प्रकाश डाला है।

**दीनदयाल उपाध्याय:** कर्तव्य एवं विचार महेश चंद्र शर्मा द्वारा लिखित एक विशाल कृति है, जिसमें 474 पृष्ठों में बारह अध्याय हैं। लेखक ने दीनदयाल की जीवनी लिखने का प्रयास किया है, जिसमें उनके प्रारंभिक जीवन, आरएसएस के साथ उनके संपर्क और भारतीय जनसंघ के महासचिव और अध्यक्ष के रूप में राजनीतिक क्षेत्र में उनकी चिंताओं और गतिविधियों का वर्णन किया गया है। दीनदयाल के मानवतावाद की व्याख्या करते हुए लेखक ने दीनदयाल के दर्शन की बुनियादी अवधारणाओं, जैसे कि वयष्टि (मनुष्य), समष्टि (समाज), संस्कृति (संस्कृति), चिति (आचार या आत्मा), विराट (ऊर्जा), आदि की व्याख्या और कल्पना की है। इसके अलावा, लेखक ने दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक विचारों को समझाने और उनका विश्लेषण करने का प्रयास किया है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि सदियों पुराने भारतीय दर्शन का दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद पर प्रभाव है।

डॉ. हरीशचंद्र बर्थवाल ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्तित्व एवं जीवन-दर्शन पुस्तिका में दीनदयाल उपाध्याय पर संक्षिप्त जीवनी दी है। इसके बाद उनके एकात्म मानववाद के दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है, जिसमें मनुष्य, समाज, मनुष्य और समाज के संबंध, पुरुषार्थ की चतुर्विध अवधारणा, राज्य, राष्ट्र और राष्ट्रवाद तथा विश्व शांति पर उनके विचार शामिल हैं। उन्होंने विशेष रूप से कृषि और औद्योगिक विकास के संदर्भ में अपने आर्थिक विचारों पर भी चर्चा की है।

डी. बैंडिस्ट ने अपनी पुस्तक ह्युमनिस्ट थॉट इन कंटेम्परेरी इंडिया में एम.एन. रॉय, राम मनोहर लोहिया, बी.आर. अंबेडकर, एस.एन. अग्निहोत्री, कार्ल मार्क्स और एन.के. देवराज के संदर्भ में भारतीय मानवतावादी परंपराओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पुस्तक सात भागों में विभाजित है। पहले अध्याय में मानवतावाद का अर्थ समझाते हुए लेखक ने तर्क दिया है कि यह एक दर्शन है, जिसका केंद्रीय विषय मानव का

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

कल्याण है। बाद के अध्यायों में लेखक ने उपर्युक्त विद्वानों के विचारों को समझाने, उनका विश्लेषण करने और उनकी जांच करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार इन सभी विद्वानों ने मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया है और एक खुशहाल मानव जीवन के निर्माण के लिए विभिन्न रणनीतियों का विकास किया है।

पार्थ एस घोष ने अपनी पुस्तक, भाजपा और हिंदू राष्ट्रवाद का विकास: परिधि से केंद्र में भाजपा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दी है और इसकी विचारधारा, कार्यक्रमों और राजनीतिक एजेंडे पर प्रकाश डाला है। लेखक का मानना है कि चूंकि भाजपा के प्रभाव में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, इसलिए इस पार्टी और हिंदू राष्ट्रवाद के पीछे की घटना और विचारधारा को समझना और उसका विश्लेषण करना उचित है। इस संदर्भ में लेखक ने दीनदयाल उपाध्याय की भूमिका पर भी प्रकाश डाला है जो लंबे समय तक पार्टी से जुड़े रहे। लेखक ने भारतीय विदेश नीति के प्रति दीनदयाल के दृष्टिकोण का उल्लेख किया है। उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि दीनदयाल के एकात्म मानववाद ने भाजपा की आर्थिक नीति का आधार बनाया। हालाँकि, लेखक ने दीनदयाल के एकात्म मानववाद के दर्शन पर विस्तार से चर्चा नहीं की है।

दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका मंथन में "दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद: मूल दस्तावेज, व्याख्याएं, संदर्भीकरण और तुलनाएं" शीर्षक से चार खंड हैं। खंड ए - "मूल दस्तावेज" में दो दस्तावेज हैं। पहला दस्तावेज, "सिद्धांत और नीतियां" दीनदयाल उपाध्याय द्वारा तैयार किए गए दस्तावेज का एक अंश है, जिसे भारतीय जनसंघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ने 23-25 जनवरी, 1965 को विजयवाड़ा में अपनी बैठक में अपनाया था। दूसरा दस्तावेज, "एकात्म मानववाद" में दीनदयाल उपाध्याय द्वारा मुंबई में 22-25 अप्रैल, 1965 को दिए गए चार व्याख्यान शामिल हैं, जो एकात्म मानववाद के उनके दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर उनके विचारों को प्रतिबिंबित करते हैं। खंड-बी जिसका शीर्षक "व्याख्याएं" है, में विभिन्न लेख शामिल हैं गोलवलकर ने दीनदयाल के मनुष्य के बारे में विचारों पर चर्चा करते हुए तर्क दिया है कि दीनदयाल एक महान विचारक और दार्शनिक थे जिन्होंने चार पुरुषार्थों, अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष के आधार पर एकात्म मानव और उसके सर्वांगीण विकास की बात की थी। अगले दो लेख दीनदयाल के एकात्म मानववाद के दर्शन के अध्ययन के लिए समर्पित हैं। डी.बी. ठेंगड़ी ने अपने लेख, "एकात्म मानववाद - एक अध्ययन" में तर्क दिया है कि दीनदयाल ने समकालीन दुनिया की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप एकात्म मानववाद के अपने दर्शन को विकसित किया था।

इस दर्शन की कल्पना मौजूदा सामाजिक और राजनीतिक सिद्धांतों को परिपूर्ण बनाने के लिए की गई थी, ताकि वे अपने सामने आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें। डॉ. चंद्र पी. अग्रवाल ने "एकात्म मानववाद: मानवीय सामाजिक आर्थिक व्यवस्था के लिए एक दर्शन" में सबसे पहले एकात्म मानववाद को कुछ अन्य

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

प्रमुख मानवतावादी आंदोलनों से अलग किया है। इसके बाद एकात्म मानववाद में दीनदयाल की मनुष्य की अवधारणा पर चर्चा की गई है। अंत में, लेखक ने उपाध्याय द्वारा अपनी सामाजिक-आर्थिक प्रणाली में इस अवधारणा के उपयोग का विश्लेषण किया है। महेश मेहता ने एकात्म मानववाद के दर्शन के सामाजिक पहलू पर चर्चा की है, जबकि डॉ. अमित कुमार मित्रा ने दीनदयाल उपाध्याय की आर्थिक सोच पर प्रकाश डाला है। लेखक ने तर्क दिया है कि दीनदयाल द्वारा सुझाई गई आर्थिक संरचना का मुख्य केंद्र मनुष्य है। इस संदर्भ में डॉ. मित्रा ने मनुष्य, मशीन और तकनीक के बीच संबंधों पर अपने विचारों की भी चर्चा की है।

"संदर्भीकरण और तुलना" शीर्षक वाले खंड-सी में सात लेख हैं। डॉ. महेश चंद्र शर्मा ने "भारतीय विचार परंपरा की निरंतरता" लेख में कहा है कि दीनदयाल उस विचारधारा से संबंधित थे जो देशी ज्ञान और जीवन शैली की श्रेष्ठता पर जोर देती थी। यह तर्क दिया गया है कि उनके लेखन और विचारों ने वेदों, पुराणों, स्मृतियों और उपनिषदों से प्रेरणा प्राप्त की। "दीनदयालजी, आरएसएस और हिंदू राष्ट्रवाद" लेख में बी.के. केलकर ने आरएसएस के स्वयंसेवक के रूप में दीनदयाल की राजनीतिक गतिविधियों और नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण पर उनकी धारणाओं का अध्ययन करने का प्रयास किया है। केलकर ने तर्क दिया कि यद्यपि दीनदयाल आरएसएस में थे, फिर भी उनका दृढ़ विश्वास था कि भारतीय विचारों में कुछ बदलाव लाने की आवश्यकता है ताकि भारत आधुनिक दुनिया में जीवित रह सके। लेकिन दीनदयाल के अनुसार ऐसे बदलाव देश के मूल चरित्र को बनाए रखते हुए किए जाने चाहिए।

डॉ. वाल्टर के. एंडरसन ने महात्मा गांधी और दीनदयाल उपाध्याय के विचारों और दृष्टिकोणों की तुलना और विरोधाभास किया है। लेखक ने निष्कर्ष निकाला है कि दोनों के बीच कई मतभेदों के बावजूद, दोनों इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि समाज में पुरुषों की गुणवत्ता ही अंततः राज्य की प्रकृति निर्धारित करेगी।

'गांधी, लोहिया, दीनदयाल का आर्थिक चिंतन' शीर्षक लेख में डॉ. केशव प्रसाद सिंह ने आधुनिक भारत के इन तीन महान विचारकों और राष्ट्र-निर्माताओं के आर्थिक चिंतन के बीच बुनियादी समानताओं को इंगित किया है। डी.बी. ठेंगड़ी और डॉ. अशोक मोदक के अगले दो लेख क्रमशः मार्क्स और एम.एन. रॉय के साथ दीनदयाल के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए समर्पित हैं। अंत में, जन कृष्णमूर्ति ने दीनदयाल के विचारों की तुलना जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति की अवधारणा से की है। लेखक ने तर्क दिया है कि एक सूक्ष्म परीक्षा से पता चला है कि एकात्म मानववाद और संपूर्ण क्रांति एक दूसरे के पूरक थे।

खंड-डी में "गंतव्य" शीर्षक से चार लेख हैं। के.एस. सुदर्शन ने "एक अखंड सातत्य: एकात्म मानववाद" में तर्क दिया है कि जीवन अपनी संपूर्णता में एक सातत्य है। हमारे अस्तित्व का कारण अतीत में निहित है और हमारे भविष्य को प्रभावित करता है। यह अहसास कि यह कारण हमारे जीवन को प्रभावित करता है, हमारे अंदर

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

जिम्मेदारी की भावना पैदा करता है। उनके अनुसार, दीनदयाल ने अपने एकात्म मानववाद में इस विचार को संगठित रूप में प्रस्तुत किया है।

डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने "हिंदू धर्म-एक भू-सांस्कृतिक अवधारणा" में कहा है कि हिंदू शब्द की उत्पत्ति एक भौगोलिक अवधारणा के रूप में हुई और धीरे-धीरे भू-सांस्कृतिक बन गया। उनके अनुसार, दीनदयाल ने हिंदू दृष्टिकोण को एक धार्मिक दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने तर्क दिया है कि हिंदुत्व वह नाम है जिससे हमारी संस्कृति - हमारी जीवन शैली, दृष्टिकोण और लक्ष्य - की पहचान होती है। उनके अनुसार सनातन धर्म, हिंदुत्व, एकात्म मानववाद, सभी समानार्थी हैं.

चतुर्वेदी बद्रीनाथ ने अपने लेख "दीनदयाल के विचारों में धर्म की अवधारणा" में तर्क दिया है कि दीनदयाल ने भारत की समस्याओं के समाधान के लिए धर्म की अवधारणा को लागू किया। भविष्य के भारत के बारे में उनकी दृष्टि धर्म-राज्य है, जो न तो एक धर्मशासित राज्य है और न ही इसमें असमानता और विभाजन के लिए कोई जगह है, सुरेंद्र प्रसाद गाइन ने "ग्रामीण विकास पर दीनदयाल के विचार" में उन बुनियादी उद्देश्यों की चर्चा की है, जिन्हें दीनदयाल ने आर्थिक कार्यक्रम के आवश्यक तत्व के रूप में माना है।

'मंथर' पत्रिका में "एकात्म मानववाद के राजनीतिक आयाम" शीर्षक से शोधपत्र में एम.एम. शंखधर ने एकात्म मानववाद के समग्र दर्शन के राजनीतिक घटक को उजागर करने का प्रयास किया है। उन्होंने आधुनिक समय के लिए प्रासंगिक राजनीति के एक भारतीय प्रतिमान के लिए निष्कर्ष निकालने का भी प्रयास किया है। "कट्टरपंथी मानववाद और एकात्म मानववाद के बीच तुलना" शोधपत्र में अशोक मोदक ने एम.एन. रॉय और दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित दर्शन के बीच समानताओं और असमानताओं पर चर्चा की है। दोनों के बीच समानताओं के बारे में बात करते हुए लेखक ने तर्क दिया है कि दोनों विचारक मनुष्य को सम्मान के सर्वोच्च स्थान पर उठाने के लिए सहमत थे; दोनों आधुनिक दुनिया में एक आम आदमी की असहायता को देखकर परेशान महसूस करते थे और पूंजीवादी और साम्यवादी व्यवस्थाओं की कड़ी आलोचना करते थे। दोनों विचारकों के बीच असहमति के बिंदुओं को उजागर करते हुए लेखक ने तर्क दिया है कि एम.एन. रॉय भौतिकवादी रहे जबकि दीनदयाल अध्यात्मवादी थे; पहले वाले को मनुष्य और समाज के मामलों में धर्म का वर्चस्व नापसंद था, जबकि दूसरे वाले को सदियों पुरानी भारतीय परंपरा और धर्म की भूमिका पर भरोसा था। इसके अलावा, लेखक ने तर्क दिया है कि

एम.एन. रॉय ने मानवतावाद तक पहुँचने के लिए आमूलचूल परिवर्तन के विचार को प्रतिपादित किया है, जबकि दीनदयाल ने व्यक्ति, समाज और ब्रह्मांड के बीच परस्पर सहयोग, पूरकता और सामंजस्य पर जोर दिया है। एक अन्य शोधपत्र, "एकात्म मानवतावाद और सम्पूर्ण क्रांति" में जन कृष्णमूर्ति ने दीनदयाल उपाध्याय

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

और जयप्रकाश नारायण द्वारा प्रतिपादित विचारों की तुलना करने का प्रयास किया है। लेखक ने तर्क दिया है कि दोनों दर्शन समाज की मौजूदा स्थितियों में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक जैसे विभिन्न पहलुओं में परिवर्तन के पक्षधर थे। उन्होंने यह भी बताया है कि जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा केवल भारतीय समाज तक ही सीमित थी, जबकि दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानवतावाद का दायरा व्यापक है, जो न केवल भारतीय समाज बल्कि समग्र मानवता को भी अपने दायरे में समेटे हुए है।

पिछली चर्चा के आधार पर यह देखा गया है कि यद्यपि उपर्युक्त रचनाएँ अपने-अपने तरीके से महत्वपूर्ण हैं, लेकिन दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की विस्तृत जाँच अभी तक नहीं की गई है। इस तथ्य के बावजूद कि दीनदयाल उपाध्याय ने अकादमिक जगत में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया था, उन पर बहुत कम काम किया गया है। यह वर्तमान अध्ययन के महत्व को स्पष्ट करता है। दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन का विश्लेषण इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके मूल सिद्धांत भारतीय चिंतन के सदियों पुराने ज्ञान से लिए गए हैं। इसके अलावा वे भारत में सबसे कम ज्ञात राजनीतिक नेता हैं। "गाँधी, लोहिया और दीनदयाल" पर एक टिप्पणी में, सत्यव्रत सिन्हा लिखते हैं, "यह सच है कि दीनदयाल जी को लोगों और प्रेस से कभी भी उतना ध्यान नहीं मिला जितना कि अन्य राजनीतिक दलों के जाने-माने नेताओं को स्वतंत्रता से पहले और बाद में मिला।" इसलिए इस प्रकाश में, 'दीनदयाल उपाध्याय' के विचारों की जाँच, कल्पना और विश्लेषण करना उचित हो जाता है।

अब सवाल यह उठता है कि कोई व्यक्ति ऐसे विचारक के विचारों का विश्लेषण या व्याख्या कैसे कर सकता है, जो ऐतिहासिक संदर्भ में रहता था, जो उस संदर्भ से अलग था जिसमें हम रह रहे हैं। वे विद्वान जो पाठ्य दृष्टिकोण की वकालत करते हैं, उनका तर्क है कि लेखन के अंशों, 'पाठ्य' पर ध्यान केंद्रित करना उनमें निहित विचारों को समझने के लिए पर्याप्त है। वे "पाठ की स्वायत्तता पर जोर देते हैं क्योंकि यह अपने अर्थ के लिए एकमात्र आवश्यक कुंजी है।" हालाँकि, विचारक के विचारों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए पाठ पर विशेष ध्यान देना अपर्याप्त है। इस प्रकार पाठ्य दृष्टिकोण अतीत के विचारकों के कार्यों में 'सदाबहार रुचि' के कालातीत तत्वों के अस्तित्व को मानता है, जिसे शोधकर्ता ग्रंथों से निकालने की उम्मीद करता है और कुछ मामलों में, उनसे सीखने की भी उम्मीद करता है। लेकिन क्वेंटिन स्किनर का तर्क है, "क्लासिक ग्रंथों से सीखी जाने वाली 'सदाबहार समस्याओं' और 'सार्वभौमिक सत्यों' के संदर्भ में विषय के अध्ययन को उचित ठहराने का कोई भी प्रयास, विषय को मूर्खतापूर्ण और अनावश्यक रूप से भोला बनाने की कीमत पर औचित्य की खरीद के बराबर होगा।" उन्होंने आगे कहा, "कोई भी कथन, किसी विशेष अवसर पर, किसी विशेष समस्या के समाधान के लिए संबोधित, और इस प्रकार अपनी स्थिति के लिए विशिष्ट रूप से एक तरह से अनिवार्य रूप से मूर्त रूप है, जिसे पार करने का प्रयास करना केवल भोलापन हो सकता है।"

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

सामाजिक संदर्भ पर विचार करने से हमें पाठ की बेहतर समझ प्राप्त करने में मदद मिलती है। विचारक के विचारों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए यह समझना ज़रूरी है कि विचारक किस तरह के समाज के लिए लिख रहा था और उसे किस तरह के विचारों को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा था। अर्नेस्ट गेलनर का तर्क है कि अवधारणाएँ और विश्वास अलग-अलग ग्रंथों या व्यक्तिगत दिमाग में मौजूद नहीं होते, बल्कि मनुष्य और समाज के जीवन में होते हैं। जिन गतिविधियों और संस्थाओं के संदर्भ में किसी शब्द या वाक्यांश या वाक्यांशों के समूह का उपयोग किया जाता है, उन्हें उस शब्द या इन वाक्यांशों को समझने से पहले जानना चाहिए, इससे पहले कि हम वास्तव में किसी अवधारणा या विश्वास के बारे में बात कर सकें।

यह भी देखा गया है कि कभी-कभी शब्दों के अर्थ समय बीतने के साथ बदल जाते हैं और पाठ स्वयं यह संकेत नहीं देता कि उसके लेखक ने शब्दों का किस तरह से उपयोग किया है। किसी शोधकर्ता को किसी दिए गए पाठ में आने वाले शब्दों के अर्थ को समझने के लिए, उसे पाठ से परे जाना पड़ता है। शुद्ध पाठ्य अध्ययन भी शोधकर्ता को यह समझने में सक्षम नहीं बनाता कि विचारक क्या छिपे हुए या परोक्ष संदर्भ दे रहा है या यह देखने के लिए कि विचारक अपने तर्कों में विडंबना बुन रहा है या नहीं। इनके लिए उस सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ की जांच करना आवश्यक है जिसमें विचारक लिख रहा है। इस प्रकार एक एकीकृत दृष्टिकोण का पालन किया जाएगा जिसमें पाठ और "वह सामाजिक संदर्भ जिसमें पाठ लिखा गया है" दोनों का अध्ययन शामिल होगा।

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के दर्शन को समझने, व्याख्या करने, विश्लेषण करने और मूल्यांकन करने का प्रयास किया जाएगा। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य एकात्म मानववाद के समग्र दर्शन से सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक घटकों को सामने लाना और उनसे भारतीय समाज और मानवता के लिए निष्कर्ष निकालना है। दीनदयाल के दर्शन की विस्तृत और व्यापक समझ के लिए, उनके विचारों के विभिन्न आयामों का विश्लेषण मानवतावादी विचारों के तुलनात्मक और मूल्यांकनात्मक ढांचे में किया गया है; पश्चिमी और भारतीय दोनों। अधिक सटीक रूप से, उनके एकात्म मानववाद के दर्शन के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आयामों का संक्षेप में विश्लेषण किया गया है।

## संदर्भ:

1. महेश चंद्र शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय: कर्तव्य एवं विचार (नई दिल्ली: वसुधा प्रकाशन, 1994), पृ.एल.
2. सुंदर सिंह भंडारी राजस्थान के उदयपुर के निवासी हैं. एक शिक्षक से आरएसएस के प्रचारक बने, जो राजनीति में शामिल हो गए. दीनदयाल की मृत्यु के बाद वे बीजेएस के महासचिव बने और लंबे समय

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

तक बीजेपी के उपाध्यक्ष रहे. वे बिहार और गुजरात के राज्यपाल रहे.

3. दीनदयाल के कॉलेज के साथी श्री बलवंत महाशब्दे का आरएसएस से संपर्क था. वे मुंबई के विलेपार्ले में स्थायी रूप से बस गए.
4. "लाइफ इन आउटलाइन", पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एक प्रोफ़ाइल, संपादक सुधाकर राजे (नई दिल्ली: दीनदयाल शोध संस्थान, 1972), पृ. 7.
5. बापुराव मोघे, "कई गुणों वाला व्यक्ति," डेस्टिनेशन में, संस्करण। सुधाकर राजे (नई दिल्ली: दीनदयाल अनुसंधान संस्थान, 1978), पृ. 70. 'वही.
6. शांति भूषण, "विचारक और प्रचारक," डेस्टिनेशन में, ऑप। सिट., पी. 77.
7. नानाजी देशमुख, "द मैन एंड द थॉट," एम डेस्टिनेशन, ऑप। सिट., पी. 32. ' [8]. महेश चंद्र शर्मा, op.cit., पृ. 30-31. "
8. "जीवन की रूपरेखा," एम पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एक प्रोफ़ाइल संस्करण। सुधाका आर राजे, op.cit., पी। 9.
9. महेश चंद्र शर्मा, op.cit., पी. 30.
10. वसंत नरगोलकर, "गांधी, लोहिया और दीनदयाल," एम गांधी, लोहिया और दीनदयाल, संस्करण। पी. परमेश्वरन (नई दिल्ली: दीनदयाल अनुसंधान संस्थान, 1978), पी. 10.
11. पंडित दीनदयाल उपाध्याय: ए प्रोफाइल, संस्करण में "लाइफ एम आउटलाइन"। सुधाकर राजे, ओपी. सिट., पी. 11।
12. डी.बी. ठेंगड़ी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारधारा और धारणा: एक जांच (नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, 1988), पी।
13. महेश चंद्र शर्मा, op.cat.,p. 70.
14. पंडित दीनदयाल उपाध्याय: ए प्रोफाइल, संस्करण में "लाइफ इन आउटलाइन"। सुधाकर राजे, ओपी. सीआईटी.
15. महेश चंद्र शर्मा, op.cit.,p. 97. 29
16. डी.बी. ठेंगड़ी, उनकी विरासत: हमारा मिशन (कालीकट: जयभारत प्रकाशन, 1973), पृष्ठ 7।
17. "सिद्धांत और मानवतावाद: बुनियादी और तुलना।
18. सुंदर सिंह भंडारी, "विचारक और नेता का अनोखा मिश्रण," डेस्टिनेशन ऑप में। सिट., पी. 75. 30
19. सुधाकर राजे, एड., पंडित दीन दयाल उपाध्याय: एक प्रोफ़ाइल (नई दिल्ली: दीन दयाल अनुसंधान

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

संस्थान, 1972)।

20. महेश जे, मेहता, एड., उपाध्याय का एकात्म मानववाद: अवधारणाएं और इसके अनुप्रयोग (एडिसन: अमेरिका की दीनदयाल उपाध्याय समिति, 1980)।
21. परमेश्वरन पी., एड., गांधी. लोहिया और दीनदयाल,. (नई दिल्ली: दीनदयाल अनुसंधान संस्थान, 1978)।
22. डी.बी. ठेंगड़ी, पं.दीनदयाल उपाध्याय,. विचारधारा और धारणा: एक जांच (नई दिल्ली: सुरुचि
23. प्रकाशन, 1988) .
24. वी.वी.नेने, पंडित दीन दयाल उपाध्याय,. विचारधारा और धारणा: एकात्म मानववाद (नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, 1988)।
25. बी.के. केलकर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, विचारधारा और धारणा: राजनीतिक विचार (नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, 1988)।
26. शरद अनंत कुलकर्णी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, विचारधारा और धारणा: अभिन्न आर्थिक नीति (नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, 1989)।
27. सी. पी. भिशिकर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, विचारधारा और धारणा: राष्ट्र की अवधारणा (नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, 1988)।
28. बी.एन.जोग, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, विचारधारा और धारणा: राष्ट्र की खातिर राजनीति (नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, 1989)
29. वी.एन.देवधर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, विचारधारा और धारणा: एक प्रोफ़ाइल (नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन, 1989)।
30. सुधाकर राजे, एड. गंतव्य (नई दिल्ली: दीनदयाल अनुसंधान संस्थान, 1978)।
31. डी.बी. ठेंगड़ी, उनकी विरासत: हमारा मिशन (कालीकट: जयभारत प्रकाशन, 1973)।
32. महेश चंद्र शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय: कर्तव्य एवं विचार, ऑप. सीआईटी.
33. हरिश्चंदर बर्थवाल/पंडित दीन दयाल उपाध्याय: व्यक्तित्व एवं जीवन-दर्शां (नई दिल्ली: दीन दयाल अनुसंधान संस्थान, एन.डी.)।
34. डी.डी. बैंडिस्ट, ह्यूमनिस्ट थॉट इन कंटेम्परेरी इंडिया (दिल्ली: बी.आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, 1999)।
35. एस. पार्थ घोष, बी.जे.पी- और हिंदू राष्ट्रवाद का विकास: परिधि से केंद्र तक (नई दिल्ली: मनोहर पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, 1999)।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, September 2024

36. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद; मूल दस्तावेज, व्याख्याएं, संदर्भीकरण और तुलना" मंथन, 12, संख्या 7-9 (जुलाई-सितंबर, 1991)।
37. सत्यव्रत सिन्हा, "गांधी, लोहिया और दीनदयाल," पंडित दीनदयाल उपाध्याय में: एक प्रो-फाई, सं. सुधाकर राजे, ऑप. सीआईटी., पृ.67.
38. केंटिन स्किनर, "विचारों के इतिहास में अर्थ और समझ," इतिहास और सिद्धांत, 8(1969), 3- 53.
39. अर्नेस्ट जेलनर, अवधारणाएँ और समाज," समाजशास्त्रीय सिद्धांत और दार्शनिक विश्लेषण में, सं. डोरोथी एम्मेट और अलास्डेयर मैकिनटायर लंदन: मैकमिलन एंड कंपनी, 1970), पृ.119.